Dagar dekhaiya

डगर देखाईया

सादरी बोली
जिला-जशपुर (छ.ग.)

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें, सब बढ़ें

डगर देखाईया

हिन्दी भाषा में

जशपुर जिला का संस्कृति

––00––

हमारा जशपुर जिला प्राकृतिक सुन्दरता के लिए प्रसिद्व है। यह जिला चारों ओर पहाड़ और जंगल से घिरा हुआ है। जषपुर जिले में उरॉव,गोंड़,कंवर मुण्डा जैसे आदिवासियों की संख्या अधिक है। यहां के लोंगों का मुख्य धंधा खेती बाड़ी है। समय – समय पर जंगल –पहाड़ से मिलने वाला वनोपज जैसे कंद–मूल, फल–फूल एकत्र कर अपना जीवन यापन करते है।

यहां के पुरूष धोती, कमीज,लुगी गंजी पहनते है, लेकिन आज कल समय अनुरूप पहनावा बदल रहा है। महिलाएँ साड़ी, पेटीकोट व्लाऊज के साथ–साथ दुसरा श्रृंगार कान,गला, और पैर में सोना– चांदी गिलट का आभूषण पहनते है।

शादी विवाह अपने–अपने जाति समाज में करने का प्रथा है। हमारे क्षेत्र में समान गोत्र में विवाह करना वर्जित है। हमारे क्षेत्र में लड़का का विवाह लगभग चार दिन रहता है। पहले दिन मण्डप दूसरे दिन बरात प्रस्थान तिसरे दिन विवाह और चौथे दिन चुमावन एवं प्रीति भोज रहता है। लड़की का विवाह लगभग तीन दिन रहता है, पहले दिन मण्डप उसी दिन बरात आगमन होता है। बरातियों का स्वागत के बाद में विवाह होता हैं। तीसरे दिन भोज रहता है।

हमारे क्षेत्र में दहेज प्रथा नहीं है। चुमावन में भेंट स्वरूप जाति समाज के लोग अपनी शक्ती अनुसार समान देते (चुमाते) है। हमारे क्षेत्र में शादी के लिए लड़का का उम्र 21 वर्ष और लड़की का उम्र 18 वर्ष से उपर होना आवष्यक है।

हमारे क्षेत्र में विषेष रूप से होली,दिवाली दषहरा,को तो मनाते ही हैं, इसके अलावा करम,जितिया, नयाखानी, सरहुल पुजा जैसे त्यौहार को विशेष रूप से हंसी–खुशी के साथ मनाया जाता है। करम त्यौहार लोगों को अपने कर्म और व्यवहार में सुधार करने का संदेष देती है। इसके अनुसार जो जैसा कर्म करता है उसे वैसा ही फल मिलता है। आपसी भाई–चारा को बढ़ावा देने दुख–सुख तकलीफ में एक दूसरे का सहायता करने का संदेष देती है।

करम त्यौहार में कुंवारी लड़की दिनभर उपवास रह कर शाम को करम पेड़ के डाल को काटकर मान–सम्मान के साथ मिल जुल कर आखरा में गाड़ते हैं और उसका सेवा पुजा करते हैं रात भर लड़का–लड़की बुजुर्ग पुरूष–महिलाएँ गीत गा कर मांदर झांझ के साथ खुषियाँ मनाते है। दूसरे दिन सुबह करम राजा को बहती पानी में ले करके विसर्जित किया जाता है।

इसी प्रकार जीवित पुत्रिका त्यौहार भी हमारे क्षेत्र का विषेष त्यौहार है। इस त्यौहार को विवाहित महिलाएँ पुत्र प्राप्ति की इच्छा और उनके सुख–षांति के लिए इस त्यौहार को मनाते है। इसमें विवाहित महिलाएँ कुँवार माह के कृष्ण पक्ष के सप्तमी के दिन खाइ संझत रहते है। इस दिन विवाहित महिलाएँ दिन भर उपवास रह कर शाम को खीरा को पतला–पतला टुकड़ा करके नहाने जाते है। वहीं पर नहा धो कर खीरा टुकड़ा को विधि–विधान के साथ पुजा कर पानी में विसर्जित करते है। और वापस घर आ कर आठ प्रकार के साग–सब्जी को घी से पकाते है। घी से ही रोटी या पकवान बनाने के बाद में ये सब रोटी,पकवान,साग सब्जी,दही चिवड़ा के साथ पुजा पाठ करते है। जिनके बाल बच्चे रहते हैं उनको बैठा कर पकवान खिलाया जाता है। इसके बाद व्रत धारी महिलाएँ भोजन करते है, इसी को खाई संझत कहते है।

दूसरे दिन व्रतधारी महिलाएँ पूरे दिन निर्जला उपवास रहते है। शाम को जितिया (पीपल) के डाल को काट कर लाते हैं। और विधि–विधान से गाड़ (स्थिापित) कर पुजा पाठ करते है जियत बहन,जेठी माई का कहानी किस्सा सुनते है। इसके बाद सब लोग मांदर –झांझ के साथ नाच गान करते है। मुर्गा बांग देता है तब सब व्रतधारी महिलाएँ जितिया डाली को लाई और चिउड़ा खिलाते है। सुबह साफ और बहती पानी में विसर्जित करते है।

इसके बाद नया खानी का त्योहार आता है। यह त्योहार नया अनाज आने के उपलक्ष में मनाया जाता है। संस्कृति के अनुसार कोई भी नया फल–फूल या अनाज खाने के पहले अपने – अपने कुल देवता को अर्पित कर बाद में घर परिवार के सब लोग मिलजुल कर नया अन्न खाते पीते है। इसी को नया खानी कहते है।

सरहुल पुजा धरती पुजा है। यह त्योहार बैसाख माह में मनाया जाता है। ये नये फसल बोने से पहले अच्छी पैदावार के लिए धरती माता की पुजा की जाती है। यह त्यौहार गांव–घर में सुख–शांति अमन–चैन तथा रोग व्याधी से मुक्ति के लिए सामूहिक रूप से मनाया जाता है।

हमारा जषपुर जिला धार्मिक क्षेत्र तथा प्राकृतिक सुन्दरता की दृष्टि से भी भरा पूरा है। जशपुर जिला में रानीदाह जल प्रपात, बेने जल प्रपात, राजपुरी जल प्रपात, खुड़िया रानी, मदेसर पहाड़ है जो प्राकृतिक षिवलिंग नुमा बना हुआ है। यह एक दर्षनीय स्थल के रूप में है।

धार्मिक क्षेत्र में भी जषपुर का विषेष स्थान है, यहां जषपुर का देवी मंदिर, कुनकुरी का महा गिरजाघर, चरईड़ांड का षिव मंदिर जो बहुत ही प्राचीन मंदिर है, कस्तुरा का जगन्नाथ मंदिर, बगीचा का कैलाश गुफा, किलकिला (पत्थलगांव) का किलकिलेष्वर महादेव मंदिर जो मांड नदी के तट पर बसा है ये हमारे आस्था के प्रमुख केन्द्र है, इस प्रकार हमारा जिला प्राकृतिक और धार्मिक क्षेत्र का धनी है।

समाप्त

समाप्त

स्थानीय भाषा में

जशपुर जिला कर संस्कृति

––00––

हामर जशपुर जिला प्राकृतिक कर सुन्दरता लागिन परसिद्ध आहाय। ये जिला चाइरो बट ले पहार आउर जंगल से घेराल आहाय। जशपुर जिला हें उरांव, गोंड़, कवंर, मुण्डा जैसे आदिवासी मन कर संख्या बगरा आहाय। इहां कर अदमी मन कर असली काम धंधा खेती बारी हेके। समय–समय हें जंगल पहार से भेंटायक वाला कांदा,कासा,फर,फूल ठुराई कन आपन गुजर–बसर करेन।

एजक कर मर्दाना मन धोती, कमीज, लुंगी, गंजी पिंधेन , लेकिन आईज काईल समय कर अनुसार पिंधान ,ओढ़ान बदलथे। जनी मन साड़ी, साया, जाकिट, दोसोर सिंगार पटार कान, घेंचा अऊर गोड़ हें सोना–चांदी गिलट कर गहना गोरिया पिंधेक लागथंय।

शादी बिहा आपन– आपन जाइत सागा हें करेक कर चलन आहाय। हामर इलाका हें समान गोतर में बिहा सादी करेक मना आहय हामर इलाका हें छोंड़ा कर बिहा लगभग चाईर दिन कर रेहेल। शुरू दिन मड़वा, दोसर दिन बारात, जायेक, तिसर दिन बिहा,चौथा दिन चुमान भोज रेहेल। छोड़ी कर बिहा हें लगभग तीन दिन रेहेल शुरू दिन मंड़वा ओहोय दिन बारात,पोंहिचेन बाराती परिघाल कर बाद बिहा होयेल तिसर दिन भोज रेहेल। हामर इलाका में दहेज कर लेना–देना मना आहाय। चुमान में भेंट कर रूप में जाईत समाज कर आदमी मन आपन सकती अनुसार सामान चुमाएन। हमार इलाका में छोंड़ा कर उमर 21 साल से उपरे आऊर छोंड़ी कर उमर 18 साल से उपरे कर के बिहा करेन।

हामर इलाका हें विशेष रूप से फगुन दसई,सहदई, हशहरा के तो मानाबे करेन इकर अलावा करम, जितिया, नावाखानी ,सरहुल पुजा जइसन परब के विशेष रूप से हंसी खुसी से करम परब आदमी जन के आपन करम व्यवहार में सुधार करेक कर संदेश देल इकर अनुसार जे आदमी जइसन काम करेल उके उसनेहे फल भेंटायल। आपसी भाई चारा के बढ़ावा देक , दुख, तकलीप में एक दोसोर कर सहायता करेक कर संदेश देल। करम परब में डिंडा छोड़ी छऊवा दिन भईर उपास रइहकन सांझ बेरा करम गछ कर डाईर के काईट लाईन कन माईन दाईन आऊर ओकर सेवा पुजा करेन। राईत ,भईर छोड़ा–छोड़ी बुढ़ा सियान गीत नन्द मांदर झांईझ कर साथ रीझ रंग करेन। दोसर दिन बिहान करम राजा के बहती पानी में लेई करके परह करेन।

ऐहे लेखे जितिया परब हों हामर इलाका कर विशेष परब हेक। ये परब के बिहोवा जनी मन छौवा – पुता कर इच्छा लेई करके आऊर उनकर सुखशांति लागिन ये परब के मनाएन। इकर महा विहोवा जनी मन कुवांर अंधरिया कर सतमी दिन खाइसंझत करेन। ये दिन विहोवा जनी मन।

दिन भईर उपवास रहेन। सांझ बेरा खिरा कर चानी बनाई कन नाहायक जाये। आऊर नहायेक ठने खिराकर चानी के विधि विधान से नाहाय धोवाय कन खिरा चानी के पोहायेन आऊर घरे आईकन आठ बरन कर साग सब्जी आऊर रोटी पीठा के घिव हे बनाएन।

ओकर बाद ये सब रोटी पीठा साग सब्जी दही चुड़ा कर साथ पुजा पाठ कइर कन जेकर छोवा पुता रेहेन उके बईठाई कन खियायेन सेकर पाछे आपने मन खायेन इखें खाई संझत केहेन। दोसोर दिन उपासिन मन दिन भईर निर्जला उपास रहेन। सांझ के जितिया (पकरी) कर डाईर के काईट लानेन । आऊर जियत वहान जेठी माय कर कहनी कथा पेरेम भाव से सुनेन। ओकर बाद सब

झन मांदर झांईझ कर साथ में गीत नन्द करेन । मुर्गा बोलेल सेखन सब उपासीन मन जितिया डाईर के लाई (चिवरा) खियायेन विहाने बहती पानी हें लेई कन परह करेन।

इकर बाद नावाखानी परब आवेल। ये परब नावा आनाज के घरे भितराल कर बाद हें। मनाल जायेल। हामर संस्कृति अनुसार कोनो नावा फलफूल या अनाज खायेक से पहिले आपन कुल देवता के चढ़ाल कर बाद में घर परिवार कर सब मिल जुईल के खायेन पियेन। इके नावाखानी केहेन।

सरहुल पूजा धरती पूजा हेके। इके बइसाख महिना में मनाब जायेट ये नया फसल बुनेक से पहिले अच्छी पैदावार लागीन धरती माता कर पूजा करल जायल। ये परब गांव घर कर सुख शांति रोग ब्याधि कर मुक्ति लागीन एके संग जूइम के मनाल जायेल।

हामर जशपुर जिला धारमिक रूप से आऊर परकिरती सुन्दइर कर नजइर से हूँ भरल पूरल अहाय। जशपुर जिला में रानी दाह,घाघ, बेनेघाघ , राजपुरी घाघ खुड़ियारानी मदेसर पहार ये मन विशेष देखेएक लाईक अहाय। मदेसर पहार प्राकृतिक भिवलिंग लेखे बनल अहाय। जे देखेक लाईक जगह अहाय।

धरम – करम कर मामला में हूं जशपुर कर विशेष जगह अहाय। ईहां जशपुर कर देवीगुड़ी, कुनकरी कर महा गिरजाघर, चरईडांड़ कर बुढ़ा महादेव मंदीर, जे ढ़ेर पुरना मंदीर हेके। कस्तुरा कर जगरन्नाथ मंदीर, बगीचा कर कैलास गुफा, किलकिला कर महादेव मंदीर, परसिद्ध अहाय। ई लेखे हामर जशपुर जिला परकिरती कर आउर धरम – करम कर मामला हें धनी जिला हेके।

समाप्त

सात भाइयों का एक गिलहरी

——00——

बहुत समय पहले का बात है। एक गांव में सात भाई रहते थे। वे एक गिलहरी पाल रखे थे, गिलहरी बहुत अच्छा व सुन्दर था। सातो भाई गिलहरी के साथ खेलते, खाते पीते और साथ मे सोते थे। इसी तरह उनका समय सुख पूर्वक ब्यतीत हो रहा था। एक दिन सातो भाई विचार किये, यदि हम लोग एक–एक घोड़ा खरीद लेते तो घोड़ा में बैठ के व्यापार करने देष विदेष जाते। यही सोंच के सातो भाई घोड़ा खरीदने हल्दी बाजार जाने लगे, तब गिलहरी कहा – भईया मैं भी घोड़ा खरीदने जाऊंगा। सातों भाई बोले चल बे तुम घोड़ा खरीदने जाओगे, तुमको हम लोग नहीं ले जायेंगे। यह कह कर गिलहरी को एक घर में बन्द करके चल दिये।

गिलहरी जैसे – तैसे घर से निकला और पीछे चलने लगा। कुछ दूर जाने के बाद सातों भाईयों का भूख को लगा। रास्ते के किनारे एक जामून का पेड़ था। जिसमें जामुन पक कर काला दिख रहा था। सातो भाई सोचने लगे, जामून तोड़ कर खिलायेगा, कौन गिलहरी को भी हम लोग नहीं लाये। जो हम लोगों को जामून तोड़ कर खिलाता, उसी समय पीछे से गिलहरी बोला हां भईया मैं आ रहा हूं। चिन्ता की कोई बात नहीं है, मैं जामून तोड़ कर खिलाऊंगा। गिलहरी पेड़ पर चढ़ गया और जामून तोड़ – तोड़ कर नीचे गिराने लगा। सातो भाई बिन–बिन कर पेट भर के जामून खाये। खाने के बाद जब जाने लगे तब गिलहरी पेड़ से न उतर पाये यह सोंच के सातो भाई पेड़ के चारों ओर कांटा लगा दिये और वहां से आगें चल दिये। इधर गिलहरी जैसे तैसे पेड़ से उतरा और उनके पीछे –पीछे जाने लगा। आगे जाते–जाते सातो भाईयों का पानी प्यास लगा। इधर–उधर देखे, नजदीक में एक कुऑ दिखा। वहां जा के देखे तो रस्सी और बाल्टी नहीं था। पानी पियें भी तो कैसे, सोंच रहे हैं, कि गिलहरी को साथ में तो नहीं लाये। गिलहरी होता तो कुऑ में उतर कर पानी पिलाता, इतने में पीछे से गिलहरी कहा हां दादा मैं आ रहा हूँ। कहते हुए पहूंच जाता है। गिलहरी झट से कुऍ में उतर जाता है। और पानी भर कर सबको पानी पिलाता है, गिलहरी एक बार फिर से कुआं में उतरता है तो उसी समय गिलहरी कुऑ से बाहर न निकल पायें यह सोच कर कुऑ को पत्थर से पाट देते हैं। और वहां से आगें चल दिये , गिलहरी जैसे तैसे जगह खोज कर बाहर निकला और सातो भाईयों के पीछे – पीछे चल दिया। जाते –जाते कई दिन के बाद हल्दी बाजार पुहॅच गये।

बाजार में जाके देख रहे हैं तो घोड़ा का लाईन लगा हुआ है। सातो भाई अपने–अपने मन पसन्द घोड़ा छॉट रहे हैं। विक्रेता से पूछते हैं , घोड़ा कैसा है इसका चाल कैसा है। बेचने वाले अपने – अपने घोड़ा की चाल बताते हैं कि यह कदमाही चाल का घोड़ा है, वो घुड़ दौड़ चाल का घोड़ा है। वो तेज चाल का घोड़ा है ,कह के बताते अब गिलहरी भी अपने लिए घोड़ा छांटता है वह लकड़ी का एक मुदगर हाथ में ले पड़ के घोड़ा के पास जाकर घोड़ा को एक मुदगर मारता है। घोड़ा हिन हिनाता है चो हों हों हों घोड़ा से पूछता है कि तुम्हारा चाल कैसा है। तब घोड़ा कहता है मैं कदमाही चाल का घोड़ा हूं। तब गिलहरी कहता है चलो हटो तुम ठीक नहीं हो, तुमको कौन खरीदेगा। फिर दूसरे घोड़ा के पास जाकर फिर एक मुदगर मारता है। घोड़ा हिन हिनाता है और कहता है मैं घुड़ दौड़ चाल का घोड़ा हूं। उसको भी कहता है तुम को ले के मैं क्या करूंगा उसको भी नहीं लेता है। ऐसे ही करते–करते सभी घोड़ा के पास जाता है, इधर सातो भाई घोड़ा खरीद कर गिलहरी से मिलते हैं और उससे पूछते हैं कहां यार खरीदा की नहीं खरीदा। गिलहरी कहता है नहीं मैं नहीं खरीद पाया हूं आप लोग चलते रहो मैं खरीद कर आ रहा हूं । अन्त में गिलहरी एक कमजोर मरियल घोड़ा के पास पहूंचा। उसने घोड़ा को जोर से एक मुदगर का वार किया घोड़ा जोर से हिन हिनाया, गिलहरी पूछा तुम्हारा चाल चलन कैसे है। घोड़ा ने जवाब दिया नहीं मैं धरती में नहीं चलता हूं मैं उपर ही उपर हवा में उड़ता हूं गिलहरी कहा हां तब तो तुम ठीक हो मैं तुम्हीं को खरीदूँगा ।

उस घोड़ा का नाम था। छिंदल बछेड़ा। अब गिलहरी घोड़े में सवार हुआ, मारा कोड़ा उड़ा घोड़ा उपर– उपर उड़ते उड़ते उन लोगों से पहले आ कर रास्ते में एक जगह घोड़ा का बांध कर आराम करने लगा। इधर सातो भाई अपना–अपना घोड़ा लेकर आ रहे हैं , उनकी गिलहरी से मुलाकात होती है। उन्हें बड़ा ताजुब होता है और कहते हैं, देखो तो ये गिलहरी कितना समय घोड़ा खरीदा और हमस` आगे आ कर यहां बैठा है, और किस रास्त से आया कभी दिखा नहीं।

अब वहां से वे आगें जाने लगते हैं। गिलहरी से कहते हैं चलो तुम्हारा घोड़ा को चलाओ तब गिलहरी कहता है चलो आप लोग चलते रहो मैं थोड़ा आराम कर लेता हूं । वैसे भी मेंरा घोड़ा तो कमजोर मरियल जैसा है। इसे पानी वानी पिला कर जाऊंगा, सातो भाई आगें जाने लगते हैं अब गिलहरी आराम से घोड़ा में सवार होता है वैसे ही मारा कोड़ा उड़ चला घोड़ा उपर ही उपर उनसे पहले घर पहुंच गया और घोड़ा को बांधकर बैठा है। दूसरे दिन सातो भाई राजा के सादी के पईरघनी (बरातियों का स्वागत जुलूस) के लिये अपने अपने घोडों का सजा रहे है। गिलहरी चार जैस बस्ती का व्यवस्था किया। रात हुई तब सब अपना अपना घोड़ा को दौड़ा रहे है। गिलहरी अपना घोड़ा छिंदल बछेड़ा के चारो पैर में एक एक गैस बत्ती जलाकर बांध दिया। और घोड़ा मे सवार हो के मारा कोड़ा उड़ चला घोड़ा और उपर ही उपर घुमने लगा। सभी लोग देखकर घबरा गये। देखो तो ! गिलहरी को ओ देखो उपर ही उपर उड़ रहा है। सातो भाई का घोड़ा पीछे रह गया और वे हार गये। और शर्म से गिलहरी से ईर्ष्या करने लगे। उन्होने विचार किया। चलो गिलहरी का घोड़ा को मार डालते हैं। ऐसा विचार करके सातो भाई गिलहरी के घोड़ा को मार डाला।

अब गिलहरी अपना मरा हुआ घोड़े का चमड़ा निकाल कर सूखने के लिये एक पेड़ पर टांग दिया। चमड़ा सूखकर कड़ा हो गया। एक दिन चोरों ने रूपये पैसे , सोना चांदी चुराकर उसी पेड़ के नीचे लाये और आपस में बटवारा करने लगे । आपस में मेंरा कम तुम्हारा ज्यादा कहकर झगड़ रहे थे । उसी समय गिलहरी मौका देखकर घोड़ा का सूखा चमड़ा को गिरा दिया। चोर डर से भूत भूत कहते सोना चांदी रूपया पैसा को छोड़ के भाग गये। गिलहरी पेड़ से नीचे उतरा और सोना चांदी रूपया पैसा को रात भर अपने घर में ढोया।

उसने सबेरे तराजू मांगने के लिये अपने भाईयों के पास गया। तराजू ला करके उसे तौला और बाद में उसे पहूंचा दिया। तराजू के पड़ला के नीचे सोने का एक मोहरा चिपक कर रह गया था। उसके भाईयों ने देखा अरे ये तो पैसे को तौलने लिया था। कहां से ये इतना पैसा पाया। सातो भाईयों ने गिलहरी से पूंछा। गिलहरी ने कहा अरे दादा क्या कहोगे वही मरा हुआ घोड़ा का चमड़ा को बेचा। कितना पैसा मिला? अरे दादा क्या मिलेगा मरियल घोड़ा तो था। ज्यादा किमत नहीं मिला। तीस किलो सोने का मोहरा मिला। उसके सब भाई सोचने लगे अरे यार इसका तो मरियल घोड़ा था फिर भी तीस किला सोने का मोहरा मिला। हम लोगों का घोड़ा ता इससे बढ़िया है तगड़ा है। हम लोगों को तो ज्यादा मिलना चाहिये। ऐसा सोच के सभी भाई अपने अपने घोड़ों का मार डालते है। और उसका चमड़ा निकाल कर गिलहरी से पूछते हैं कि चमड़ा बेचने कहां लिया था। गिलहरी कहता है वहीं हल्दी बाजार लेके गया था। इधर सातो भाई अपना अपना बैल गाड़ी में चमड़ा लादकर हल्दी बाजार की ओर चल पड़े । रासते में गांव मिला आवाज लगाते हैं– चमड़ा ले लो चमड़ा ले लो अच्छा घोड़ा का चमड़ा। गांव वाले सुनकर हांथ डण्डें लेकर उन्हे धमकाते हुये कहते हैं– क्या यहां घसिया चमरा का बस्ती है। जो यहां चमड़ा बेचने आये हो। चल भाग यहां से नही तो मार खायेगा। ये सातो भाई चमड़ा फेक के अपना जान बचाकर भागे।

अब सातो भाई सोचने लगे साला चिडरा(गिलहरी) हम लोगों का मूर्ख बनाया है चलो इसका घर को जला देंगे ऐसा कह के उसके घर में आग लगा दिये । गिलहरी का पूरा घर जलकर राख हो गया। गिलहरी अपने घर का राख को इकट्टा किया, बोरा में भरा और बैल गड़ी में रख करा हल्दी बाजार की ओर चल दिया। रास्ते में एक साहूकार मिला जो गांव में अपना मनीहारी सामान

बेचकर वापस आ रहा था। साहूकार कहा ये गिलहरी भाई कहां जा रहे हो! अपने बैल गाड़ी में मुझे भी बैठाकर ले चलो न मैं बहुत थक गया हूं। मुझसे चला नहीं जा रहा है। गिलहरी कहा–नहीं नहीं तुमको मैं अपनी गाड़ी में नहीं बैठा सकता। मेंरे पास इनबोरो में सोना चांदी भरा हुआ है । यदी तुम बैठ के पाद दोगे तो मेरा सोना चांदी जलकर राख हो जायेगा। तो मैं क्या करूंगा । साहूकार कहा नहीं मैं नहीं पादुंगा। अगर ऐसा हो भी गया तो मेरे पास जितना सोना चांदी है सब को तुम ले जाना। गिलहरी राजी हो गया। ठीक है आओ बैठ जाओ कहके बैठा लिया और जाने लगे। जाते जाते आधे दूर में साहूकार को गैस छोड़ने की इच्छा हुई और गैस छोड़ दिया। गैस के छुटते ही राख उड़ने लगा। गिलहरी बोला देखो देखो आखिर तुमने वही किया जिसको मैं मना किया था। मेरा सारा सोना चांदी जल के राख हो गया। अब तुम्हारा सोना चांदी को मुझे दो । साहूकार अपना सब सोना चांदी को गिलहरी को दे दिया। गिलहरी सोना चांदी को गाड़ी में भरा और अपना घर वापस आ गया।

दूसरे दिन वह तौलने के लिये फिर से तराजू मांगने गया। उसके भाईयों ने पूछा क्या करोगें तराजू को? गिलहरी बोला वही घर का राख को बेचा हूं उसी को तौलूंगा । तराजू लेकर तौला तो इस बार भी एक सिक्का पलड़ा से चिपक गया। भाईयों ने पूछा कि कितना सोना चांदी मिला। अरे भाई कितना मिलेगा? मेंरे तो वैसे भी छोटा घर था। साथ बोरा तो राख हुआ, सात बोरा का सात किलो सोना मिला। अब ये सातो भाई सोचे कि इसका तो छोटा सा घर था और सात बोरा राख निकला हम लोगों का घर तो बड़ा बड़ा है। हमलोगों का ज्यादा राख होगा। ऐसा सोचकर सब अपने अपने घरों को आग लगा दिये। राख को बोरा में भरकर सुन्दरी गिलहरी से पूछे राख बेचने किधर गया था? गिलहरी बोला वही हल्दी बाजार की ओर गया था। ये लोग सभी अपने अपने घर के राख को बैल गाड़ी में भरकर हल्दी बाजार की ओर गये। गांव गांव घुमतं हुये आवाज लगाते है राख ले लो राख ले लो। उनके आवाज सुनकर गांव वाले कहते है– क्या हमारा गांव धोबी का गांव है, जो तुम यहां राख बेचने लाये हो भागना है तो भागो नही तो अभी देखना मार खाओगे। ये सातो भाई राख फेक कर भागे और बिचार किया कि ये गिलहरी हम लोगों का धोखा दिया। चलो इसे मारकर खत्म कर देते हैं। यह सोचकर आते हैं गिलहरी उनके विचार को समझ जाता है और उनके आने से पहले अपना रूपया पैसा सोना चांदी लेकर भाग जाता है ये लोग ढूंढते रह जाते हैं।

समाप्त

सात भाई कर गोटेक चिडरा (चिडरा कर होलक नटरा–निटरा)

––00––

ढेइर समय पहिले कर गोईठ हेके! गोटेक गांव में सात भाई रहत रहलंय। उमन गोटेक चिड़रा पोइस रहलंय। चिडरा मुरूख बेस आउर सुन्दर दिसत रहे। सातो भाई चिड़रा संग खेलत – रहलंय ! संघे खात पियत रहलंय, संघे सुतत – बइठत रहलंय। येहे लेखे हंसत खेलत उमनकर दिन बित्त रहलक। एक दिन सातो भाई विचार करलंय कि गोटेक –गोटेक घोड़ा किनती हले घोड़ा में चइढ़ के कमायेक – खायेक ले देष दुनिया जाती । येहे सोईच के सातो भाई घोड़ा किनेक हरदी बाजार जायेक लागलंय । से खने चिडरा कहलक, ए दादा मोहों घोड़ा किनेक जाबूं । खने सातो भाई कहलंय, हटबे ! तोय घोड़ा किनेक जाबे। तोके हामें नी लेजी कइह के गोटेक घरे ढाईप राखलंय आउर चइल देलयं। चिडरा कोनो लेखे घर से निकललक हर उमनकर पाछे पाछे जायेक लागलक जाते जाते सातो भाई के भूख लागलक। डगर धरी में जामकर गछ रहे, गछे जाम पाईक के करिया दिसत रहे। सातो भाई सोचलंय जाम तोईर के खियाएक वाला तो कोनो निखंय। कोन हर तो जाम तोईर के खियाई? चिडरा के हूँ हामें नी लांनली। जे हमरें के जाम तोईर खियातक। सेहे बेरा पाछे से चिडरा कहे ला कि हां दादा मोय आवथों फिकर झीन करा, मोय जाम तोईर खियाबूं । कहते आवेल आउर बदईक के गछे चईढ़ जायेल । जाम तोईर तोईर के गिरायेक लागेल सातो भाई बिछ बिछ के गुरूवां गुरूवां पेट भरूवा जाम खालंय। जाएक बेरा गछ के कांटा हें सांइट देलंय ताकी चिडरा उतरेंक झीन सके। अब उठन से चईल देलंय चिडरा कोनो लेखे हिने हुने होईके गछ से उतरलक हर उमन कर पाछे पाछे कुदायेक लागलक। आगे जाते जाते सातो भाई के पियास लागलक । हिने हुने देखलंय पासे गोटेक कुआं दिसलक उठन जाईके देंखलंय तो डोरा न बालटीग कोनो नी रहे। पानी पीये ं तो का मे ंतो पीये । हर सोचथंय कि चिडरा के तो नी लानली चिडरा रहतक होले कुआं में उतईर के पानी पियातक । एतने देरी में पाछे से हां दादा मोयं आवथों कहते चिडरा पोहेंइच जाएल। चिडरा झट से कुआं में उतरेल आउर पानी भाईर के सबके पानी पीयाएल। चिडरा आउर एक धर कुआं में उतरेल से खने कुआं से बहरे चिडरा निकलेक नी सकी कइह के कुआं के पखना से पाईट देलंय। आउर उठन से चाईल देलंय। चिडरा कोनो लेखे ठांव खोईज के कुआं से बाहरे निकलेल हर सातो भाई कर पाछे पाछे जाएक लागेल। जाते जाते कतेक दिनकर पाछे हरदी बाजार पहुंच जाएन।

बाजार में जाईके देखथंय तो घोड़ा कर लाईन लागल आहे। सातो भाई आपन मनकर घोड़ा छांटथंय। घोड़ा बेचईया से पूछेन की घोड़ाकर चाल चलन कइसे आहाय। तो घोड़ा बेचामन अपन अपन घोड़ा कर चाल बताएन, हर कहेंन की ये कदमाही चाल कर घोड़ा हेके, तो उ घुड़दौड़ चाल कर घोड़ा हेके। उ तेज चाल कर घोड़ा हेके। कइह के बताथंय । खने चिडरा गोटेक मुगरा धरलक हर घोड़ा ठन जाईके घोड़ा के घुमई मुगरा पासलक। घोड़ा चोहों हों हों हों कहेल घोड़ा के चिडरा पूछेल तोर चाल चलन कईसेन ? घोड़ा कहेल मोय कदमाही चाल कर घोड़ा हेकों कहेल। खने चिडरा कहलक भाग साला तोके कोन कीनी ? कइह के दोसरा घोड़ा ठने जाएल आउर उके हों घुमाई मुगरा पासेल। घोड़ा कहेल चोहों हो हों हों । खने चिडरा पूछेल तोर चाल चलन कइसे? घोड़ा कहेल मोय घुड़दौड़ चाल कर घोड़ा हेकों। तोके लेइज के का करबूं तो के हू नी लेजोन। येहे लेखे सब घोड़ा के पाइसकन पुराई देलक। इमन सातो भाई घोड़ा किनलयं हर चिडरा से भेट होलयं। कने ना किनले की ? खने चिडरा कहेल नाझों ने दादा। चला तोहरे मन जात रहा। अब च्रिडरा आखिरी में लिपलिपी लेखे मरियल घोड़ा ठन पोहचलक, उके हों घुईय मुगरा पासलक हर पूछलक तोर चाल चलन कईसे? नहीं मोय उपरे उपरे उड़ोन। खन चिडरा कहेल तोयं ठीक आहीस मोयं तोखें लेजबूं कइह के उके किनलक। उ घोड़ा का नाव धरलक छिन्दल बछेड़ा। अब चिडरा घोड़ा में चढ़लक हर मारलक कोड़ा, उड़लक घोड़ा। उपरे उपरे उइड़ के उमन से आगे आइके डगरे आराम से

सथाथे। इने सातो भाई आपन आपन घोड़ा लेई के आवथयं। डगरे चिडरा संग भेट होलयं । तब सातो भाई कहथंय देखा तो ना ईसाला चिडरा कतेक बेरा किनलक आउर हमर से आगे आईके इठन बईठहे? साला हर कोन डगरे आलक? अब उठन से आगे जाएक लागथयं। चिडरा के कहलयं, चलबे साला, तोर घोड़ा के चलाव। से खन चिडरा कहलक चला तोहरे जात रहा मोय तनिक सथाई लेजोंन। उसने हूं मोर घोड़ा तो मरहा लेखे आहे पानी – पाना पियाई के जाबूं। सातो भाई जाएक लागलयं अब चिडरा पाछे से घोड़ा मे चढलक मारलक कोड़ा, उड़लक घोड़ा उपरे ऊपर उमन से आगे घर पोहंइच गेलक हर घोड़ा के बांइध के बइठ आहाय।

दोसरा दिन सातो भाई राजा घरक बिहाकर पइरघनी लागीन अपन अपन घोड़ा के संपरात अहांयं। राइत होलक खने आपन आपन घोड़ा के दउड़ाएक लागथंय। हिने चिड़रा राम चाइर गोट गैंस बाती खोजलक हर बाईर के आपन घोड़ा कर चाइरो गोड़े बांईध देलक।

हर चढलक घोड़ा में मारलक कोड़ा उंड़लक घोड़ा उपरे उपरे घुमोथे। सब झन देइख के अकबकाई गेलयं। देखा तो ना चिडरा के, ओदे, उपरे उपरे उड़थे। सातो भाई उकर से हाइर गेलयं आउर लजाई गेलंय। अब इ सातो भाई चिडरा के हिंसगा होतआहायं। आउर विचार करलयं कि चला इकर घोड़ा के माईर मंरूवाब । कइह के एक दिन चिडरा कर घोड़ा के मारूवाइ देलंय ।

अब चिडरा राम मरल घोड़ा कर छाला के छोड़ालक आउर गोटेक गछे टांईग देलक। छाला झुराई के खड़खोड़ होई गेलक। एक दिन चोरहा मने रूपया पैसा सोना चांदी चोराई के आहोय गछ तरी लांनलयं आउर बांटा होत रहंय। तोर बगरा आहे, मोर थोरे आहे कइह के रेवोंर कोटोर होत रहलंय सेहे बेरा चिडरा छाला के गिराई देलक। चोर मन डरे भूत भूत कहते रूपिया पईसा सोना चांदी के छोईड़ के भाइग गेलंय। आब चिडरा उतरलक हर राईत भईर सोना चांदी के आपन घरे बोहलक। बिहाने उके तउलेक लागिन भाई हर मन से सेर बटखरा मांगेक गेलक। लाईन के तउल्लक हर बटखरा के पोंहचाई राखलक। गोटेक सोना कर पईसा बटखरा कर हेंठे बटे लटईक जाई रहलक। भाई हर मन देखलंय ये बाबा ! ये तो पईसा के तउलेक लेइज रहे। कहां ठन से एतेक पईसा भेटलक ना चिडरा से पूछलंय। चिडरा कहलक ओह ! का कहबे की दादा, ओहय मरल घोड़ा कर छाला के जुन बेचलों। कतईक पईसा भेटालक ? भाई हर मन पुछलंय । ओह ! का भेंटाई की दादा मरियल लेखे तो घोड़ा रेहे। बगरा दाम नी भेटालक। तीस किलो तो भेंटालक सब भाई हर मन सोचेक लागलंय। इकर घोड़ा तो ना मरहा लेखे रहे सेहों में तीस किलो सोना कर रूपिया भेटालक। हामर घोड़ा तो बढ़ियां तगड़ा आहे हामके तो बगरा भेटाई। इसेन सोंइच के सब हर आपन आपन घोड़ा के मईर मरूवालंय। उकर छाला छोड़ालंय, झुरूवालंय हर चिडरा से पूछलंय। छाला के कहां बेंचेक लेइज रहले। हरदी बाजार में जुन बेंचलो दादा। इने सातो भाई आपन आपन बैल गाड़ी में छाला के लाईद के हरदी बाजार जायक लागलंय। डगरे गांव बसती हें बुलात लेजलंय। आउर गूल कईर कईर के कहथंय लेवा छाला लेवा छाला, छाला मन राखबा की। खने गांव कर कहथंय – ने बे साला ! हामर गावं का घसिया – चमरा खोईर हेके जे छाला लेजब। इठन से भागिस होले भाग नितो देखबे। कइह के ठेंगा धईर धईर के निकल्लंय। ये मन सातो भाई डरे छाला के फेइक – फुका के छितिया छांद भागलंय कहां भेटंय पैइसा हर कौड़ी।

आब इमन सोचलंय साला चिडरा हामके मुरूख ठकलक। साला कर घर के पोड़ई देब, कइह के उकर घर के आईग लगाई देलंय। चिडरा कर जामा घर पोईड़ के राख होई गेलक। आब चिडरा आपन घर कर राख के ठुरालक , बोरा में भरलक, गाड़ी में लाईद के हरदी बाजार बटे लेजलक। डगरे गोटेक साहूकार जे गांव में भांवरी बुलेक जाई रहे डगरे भेट होलक साहूकार कहलक ये चिडरा कहां जाथीस ? मोके हों बइठाई लेज नी तोर गाड़ी में। थाइक गेलों जे रेंगेंक नी सको थों। चिडरा कहलक नहीं नहीं तोके नी बइठाबूं । मोर ई बोरा में सोना चांदी भरल आहाय। तोंय बइठ के पाईद देबे होले मोर सोना चांदी पोइड़ के राख होइ जाइ, होले का लेखे करबूं। साहूकार कहलक नी पादों

ना ! अगर पादिये देबूं आउर राख होइये जाई होले मोर जेतेइक सोना चांदी आहे सेके लेइ जाबे । चिडरा राजी होइ गेलक। ठीक आहाय तब बइठ कइक के बइठाई के जायेक लागलंय। जाते जाते आधा डगरे साहूकार के पादवास लागलक खने पाइद देलक। उकर पादत्त की बोरा कर राख कुहूड़ करलक। चिडरा कहलक देखले, तोके कइह रहलो जुन, मोर सोना चांदी जमा राख होइ गेलक। आब दे तोर जमा सोना चांदी के। साहूकार आपन जामा सोना चांदी के चिडरा के देइ देलक। चिडरा सोना चांदी के गाड़ी में लादलक हर घर लेइ लानलक।

दोसर दिन उके तउलेक लागिन आउर सेर बटखरा मांगेक गेलक। भाई हर मन पूछलंय का करबे जे सेर बटखरा के ? चिडरा कहलक – ओहेय घर कर राख के जून बेचेक लेइज रहलों। उके तवलबूं कहथों। सेर बटखरा लेजलक हर तवल्लक खने एहो पारी सोना कर रूपिया लटईक रहे। भाई हर मन पूछलंय कतईक सोना कर रूपिया भेटालक ? कतईक भेटाई कि मोर तो छोटे रोट घर रहे ! साते बोरा तो राख होलक सात बोरा कर सात किलो सोना भेटालक।

अब इमन सोंचलंय इकर तो छोटे रोट घर में सात बोरा राख निकल्लक । आउर सात बोरा कर सात किलो सोना भेटालक। हामर तो रोट– रोट घर आहे हामर तो बगरा राख होई कइक के आपन घर के आइग लगाई देलंय। चिडरा से पूछलंय कहां बट बेंचक लेइज रहले ? चिडरा कहलक ओहेय हरदी बाजार बट जुन लेइज रहलों येहो मन घर कर राख के समटलंय हर बोरा में भइर के हरदी बाजार बटे बेचेक गेलंय। गांव गांव बुलायेन हर गूल करेन लेवा राखमन राखबा होले, राखमन राखबा की नहीं कहेन हर गूल करेन। खने गांव कर आदमी मने कहेन – ने बे साला हामर धोबी गांव हे के का। जे तोंय राख बेचेक लाइन आहिस। भागिस होले भाग नितो देखबे। कइह के कुदायेक लागलंय। इमन सातो भाई बोरा के फेंक – फुका के छटपटात भ्मगलंय। आउर येमन विचार करलंय साला चिडरा हामके ठइक देलक। चला साला के माइर मरूवाब कइह के आलंय। चिडरा उमन कर मन कर विचार के जाइन गेलक आउर उमन कर आवेक से आघें रूपिया पइसा सोना चांदी के धइर के भाइग देलक। ये मन खेजते रइह गेलंय।।

समाप्त

सूरज और चांद

——00——

सूरज और चांद दोनो बहन थे। दोनो बहनों के बहुत ज्यादा बच्चे थे। एक दिन चांद बेल का फल को तोड़ कर लायी, और उसे अच्छा से उबाला। सूरज किसी काम से उनके घर घुमने गई। चांद उनका अच्छा से स्वागत किया और चटाई बिछा दी सूरज आराम से बैठ गई। उसी समय उबाला हुआ बेल को खाने के लिए दी। सूरज खाकर देखी जो बहुत स्वाद लगा। उसी समय सूरज पूछी क्यों बहन यह क्या चीज है? जो बहुत स्वाद लगा। तब चांद बोली, क्या कहूँ बहन मेरे बच्चों का सिर को उबाली हूं। सूरज बोली – सच में। चांद बोली हां बहन। सूरज बोली अरे मैं भी अपने बच्चों का सिर को उबालकर देखुंगी। इसी तरह सोच कर अपने घर गई,और जितने बच्चे थे सबका सिर को काट कर उबाली। जब पक गया तब खा कर देखी। लेकिन उतना स्वाद नहीं लगा। वह तो बिलकूल ही फीका लगा। उसी समय सूरज जान गई और बोली की चांद मेरे को मूर्ख बनाई है मैं इसको जहां भी देखुंगी उसे नहीं छोड्डुंगी । सूरज देख रही है कि चांद के सभी बच्चे जिंदा है। सूरज सभी बच्चों को मारकर खत्म करदी। अपने अकेला बच गई है। उसी दिन से सूरज और चांद एक दूसरे के दुश्मन बन गये। सूर्यास्त होने पर ही चांद निकलता है। उसी दिन सूरज चांद को श्राप दिया और बोली कि आज से माह में एक दिन पूरा गोल रहेगी और बाकी दिन टुकड़ा में रहेगी। उसी दिन से चांद पूर्णिमा के दिन ही पूरा गोल रहता है। और शेष दिन खंडित रहती है।।

समाप्त

बेइर आउर चांद

——00——

बेइर आउर चांद दुयो बहिन रहलंय। दुयो झनकर ढेर बगरा छऊआ – पुता रहलंय। एक दिन चांद बेल तोइर लानलक आउर बढ़ियां से भांफलक। बेइर कोनो काम से उकर घरे बुलेक गेलक। चांद उकर बढ़ियां माईन – दाईन करलक। खटिया – पटिया डिसाय देलक। बेइर आराम से बइठलक से हे खने खायेक लागिन ओहोय भांफल बेल के देलक। बेइर खाई देखलक जे उके मूरूख सावाद लागलक। खने बेइर पूछलक, ने री का हेके जे एतेइक सावाद लागलक। से खन चांद कहेल। का कहबे बहीन मोर छऊआ मन कर मुड़ी के जुन भाइंफों। सिरथों – हां बहिन अरे तब तो मोहों मोर छऊआ मन कर मुड़ी के भांईफ देखबूं। एहे लेखन सोंइंच कन आपन घर गेलक आउर जेतेक छऊआ मन रहलंय, सबकर मुड़ी के काटलक हर भांफलक। सिझलक खन खाई देखलक लेकिन ओतेक सावाद नी लागलक। ओ तो फट सिठा लागलक। से खन बेइर जानलक हर कहलक कि ये चांद मोके ठाइक देलक। इके कोनो ठन भेटलों होले उके तो नी छोड़ो। बेइर देखा थे कि चांद कर सब छऊआ मने जियत – जागत आहांय। आउर बेइर आपन छाउवा के माइर मरूवालक हर आपने एकला बांचलक। ओहे दिन ले कन चांद आउर बेइर देखा – देखी नी होंय। बेइर बुड़ेल हले चांद उगेल। ओहोय दिन बेइर चांद के सरपालक आउर कहलक कि जा तोंय महीना में एके दिन गोटा रहबे, बाकी दिन खंड़िया रहबे ओहे दिन ले चांद पुनी दिन गोटा रहेल। आउर आधा दिन खंड़या रहेल।।

समाप्त

चिरलिटिया कर चाइर गो आंड़ा

का हिन्दी रूपांतरण

लिटिया चिड़िया के चार अंडे

एक लिटिया नाम का चिड़िया था । वह चार अंडे दी थी। कुछ दिन तक अंडे सेने के बाद बच्चे निकलने का समय आया अंडे से बच्चे निकले पहले अंडा से बैल, दूसरे अंडा से भालू, तीसरे अंडा से सांप, और चौथे अंडा से आदमी का बच्चा का जन्म हुआ । जैसे बना वैसे उसकी मां बच्चा समझकर उनका पालन पोषण की जब बच्चे बड़े हो गये उनको खाने पीने की कमी होने लगी । तब बड़े भाई अपने छोटे भाइयों से कहा ओ भाईंयों घोंसला में रहते भर तो हम लोगों का पेट नहीं भरेगा इसलिये चलो हम लोग कहीं खोजने खाने के लिये चलते है ।

अब चारों भाई घोंसला से निकल के जाने लगे । बैल बड़ा भाई था अपने छोट भाईयों को खिलाते–पिलाते ले जा रहा है । जाते–जाते रास्ते में एक छोटा जंगल मिला अब भालू सोचता है कि भूखे–प्यासे रहने के बजाय ये जंगल की ओर चला जाता हूं । बड़ गुलर जो भी मिलेगा उसे खाउंगा यह सोचकर भालू जंगल की ओर चला गया । अब तीनों भाई आगे चलने लगे एक जगह एक बांबी दिखा उस समय सांप सोंचा मेरे लिये रहने का यह अच्छा जगह होगा यहीं पर मैं रहूंगा कुछ न कुछ तो खाने के लिये मिलेगा ही । सांप भी उस बांबी में घुस गया और वहीं रहने लगा अब दोनों भाई तो छुट गये बड़े भाई बैल और छोटा भाई आदमी का बच्चा आगे जाने लगे । जाते–जाते बहुंत दुर निकल गये । एक पहाड़ मिला बैल तो घास और पत्ता चरते खाते जा रहा था । लेकिन आदमी का बच्चा तो भुखा – प्यासा था । पहाड़ में एक स्थान पर एक आंवला का पेड़ था जो उसमें बहुत फल लगा था । बैल ने अपने छोटे भाई को भरपेट आंवला खिलाया अब तो उसका पेट भर गया उसे प्यास लगने लगी । बड़े भाई से कहा कि भैया मुझे प्यास लग रही है। और प्यास से जी घबरा रहा है। तब बड़े भाई ने कहा । ये भाई तुम एक डंडा ढुंढ के लाओ और एक छोर को नुकीला कर लो । छोटा भाई डंडे का अग्र भाग को नुकीला किया और उसमें एक आंवला को गुंथ दिया । बड़ा भाई ने कहा अब डंडे को पूर्व दिशा में जोर से घुमाके फेंको पूर्व तरफ जब फेंका तो आंवला गिरने पर झड़झड़ का आवाज आया ।तब बड़े भाई ने कहा– इधर पानी नहीं है । अब पश्चिम दिशा की ओर फेंको । पश्चित दिशा में ठप्प का आवाज आया अर्थात आंवला चट्टान में गिरा । बड़ा भाई ने कहा– इधर भी पानी नहीं है । अब उत्तर दिशा की ओर फेंको उत्तर दिशा की ओर फेंकने पर आंवला के गिरने पर टुभुंग का आवाज आया अर्थात पानी में गिरने की आवाज आयी । हां इधर पानी है अब दोनों भाई उधर ही जाने लगे जिधर से पानी में गिरने का आवाज आया ।वहां दोनों भाई जाकर क्या देखते हैं कि एक तालाब है जहां शुद्व निर्मल जल हिलोरें ले रहा है । उस तालाब में सात राजकुमारी जल में जलक्रीड़ा कर रही हैं ।लुकाछिपी का खेल खेल रहे हैं । ये लोग दोनों भाई , पानी पीया पानी पीते ही यह नर बालक एकदम बढ़कर नौजवान पुरूष बन गया ।

उस नौजवान पुरूष को राजकुमारी लोग देखकर कहा कि तुम भी हमारे साथ जलक्रीड़ा करो। आओ लुकाछिपी का खेल खेलते हैं । वे लोग एक शर्त रखा शर्त यह था कि जो पानी में देर तक डुबा रहेगा । जिसे हम ढूंढ नहीं पायेंगे वह हमें सातों बहिनों में से जिसे भी पसंद करेगा उसे ले जायेगा । तब उसका बड़ा भाई ने सोचा कि हमारा न तो घर न द्वार , मां न बाप कैसे छोटे भाई का शादी करूंगा , कौन हमको लड़की देगा , इसलिये शर्त को मान लेना ही अच्छा है । यह सोचकर भाई के कान में जाके चुपके से युक्ति बनाई और कहा कि तुम हां कर लो और लुकाछिपी का खेल खेलने के लिये तैयार हो जाओ । मैं तालाब के किनारे चरता रहूंगा ।

अब सातों राजकुमारी और वह लड़का पानी में लुकाछिपी का खेल खेलने के लिये चला गया । राजकुमारियों ने पानी में गोता लगाया तब वह लड़का उनको तुरंत ढूढ लिया । अब लड़का की बारी आयी तब बैल पानी पीने के बहाने अपना मुंह पानी में डुबा दिया उस समय चुपके से लड़का बैल के नाक में घुंस गया । राजकुमारी खोजते–खोजते थक गये। वे लोग लड़का को नहीं खोज पाये तब उन्होंने कहा कि हम तुमको नहीं ढूढ पायेंगे तुम पानी से बाहर आ जाओ । उस समय बैल फिर से अपना मुंह पानी में डुबा देता है । अब लड़का पानी से बाहर निकला ।

अब शर्त के मुताबिक राजकुमारियां बोले कि हम लोग हार गये हैं । अब आप सातों बहनों में से जिसे पसंद करते हैं चुनकर अपने साथ ले जाइये । लड़का सबसे सुंदरी – रूपवती राजकुमारी को चयन किया ।अब तीनों प्राणी बड़े भाई, छोटे भाई, और राजकुमारी आगे जाने लगे । जाते–जाते एक राजा के राज्य में पहुंचे और अपना रहने बसने जीने खाने के लिये राजा से जगह मांगा और जीने खाने लगे ।

एक दिन राजा का नजर राजकुमारी पर पड़ा उसकी सुंदरता देखकर राजा मोहित हो गया और उसके साथ शादी करने के लिये जिद करने लगा । राजा लड़के के पास खबर भेज दिया कि तुम अपने औरत को मेरे साथ शादी कर दो और बदले में मुझसे सोना ,चांदी ,धन, दौलत ले लो । यदि नहीं मानोगे तो मैं जबरजस्ती लड़ भिड़ करके छिन लूंगा । छोटे भाई चिंता में पड़ गया उस समय बड़ा भाई ने कहा ओ भाई मेरे रहते हुए तुमको चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं । कुछ नहीं होगा तुम चिंता मत करो तेरे लिये मैं लड़ूंगा । उसका बड़ा भाई ताकतवर था और छोटा भाई का हर दुःख तकलीफ में वह साथ देता था । इस बात को राजा समझ गया कि बैल को बिना मारे काम नहीं बनेगा । इसलिये राजा बैल को सांढ़ से लड़ाया गया बैल सांड को हरा दिया । तब बैल को हांथी से लड़वाया ,बैल हांथी को भी परास्त कर दिया । अब राजा बड़ी–बड़ी तलवार, भाला, लगा हुआ खंभे से लड़वाने का विचार किया । तब बैल अपने भाई को कहा कि हे भाई अब मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर पाऊंगा सो तुम चिंता मत करना । मैं मर जाउगा तब, तुम सात नया मटका ले आय रहना, और मेरे कान,सिंग,खुर, पुंछ के छोटे–छोटे टुकड़े करके घड़ा में रखकर ढ़ंक देना जब राजा का बारात तुम्हारे अंगना में आयेगी । उस समय तुम घड़ा का मुंह खोल देना । अब दूसरी बार बैल को लड़वाने के लिये लोहा का खुंटा में बड़ी–बड़ी तलवार और भाला –बरछा को लगया गया । बैल जब–जब खंभा को सिर से वार करता है तब तलवार और भाला से उसका सारा शरीर लहुलुहान हो गया और आखिर में बैल मर गया । अब छोटा भाई क्रंदन करने लगा बिलखबिलखकर रोने लगा । अपने भाई बैल का कान , सिंग, खुर, पूंछ को काटकर घड़ा में रख दिया और घड़ा का मुह को बंद कर दिया। इधर राजा अपना हांथी घोड़ा पालकी गाजा, बाजा के साथ में बड़ी शानदार से बारात जाने लगा । कितने प्रकार के बाजा थे कौन बाजा तो बज रहा है कि देबंय की नहीं –देबंय की नहीं (अर्थात–देंगे या नहीं–देंगे या नहीं) कौन तो बज रहा था कि देबंय री देबंय री (अर्थात–देंगे जी देंगे जी) कौन तो बज रहा था अर्र जबरजस्ती लेजब अर्र जबरजस्ती लेजब (अर्थात–जबरजस्ती ले जायेंगे जबरजस्ती ले जायेंगे) सभी बाराती नाचते–कुदते मस्ती में रंगे लड़का का घर पहुंचे। सभी बाराती आंगन में बैठ गये तब लड़का सातों घड़ा का मुंह को खोल दिया । क्या देखे ? सातों घड़ा से मधुमक्खी, भौंरे ,बर्रे भरभराके निकलने लगे । और कौन राजा कौन प्रजा जिसको जहां पाया वहीं काटने लगा हाथी घोड़ा जिसको जैसा पाया वैसे ही दुलत्ती लात हाथी रौंदने लगा सभी तरफ हाहाकार मच गया ऐसे भगदड़ में राजा कुचल कर मर गया । बचे हुए बाराती इधर–उधर जहां पाया वहां भागने लगे । राजकुमारी बच गई अब दोनों पति–पत्नी आराम से सुखपूर्वक अपनी जीवन व्यतीत करने लगे ।

धन्यवाद।

चिरलिटिया कर चाइर गो आंड़ा

——00——

गोटेक चिरलिटिया चरई रहे । जे चाइर गोट आंड़ा पाईर रहे । थोरेक दिन आंड़ा में घोरनी बइठलक । समई पुईर आलक खने आंड़ा आपने से फुटेक लागलक । पहिले आंड़ा से गरू, दूसर आंड़ा से भालू, तीसर आंड़ा से सांप, आउर चउंथा आंड़ा से अदमी छउवा कर जनम होलक , जे लेखे बनलक से लेखे माय हर छउवा मनकर पाला–दारी करलक । जे खन छउवा मन बाईढ़ गेंलय , उमनके खायेक पीयेक कर कमी होयेक लागलक, खने बड़ भाई हर आपन छोट भाई मनसे कहलक – ए भाई मन खोंता में रहत ले तो हामर पेट नी भरी, से नहीं चला हामेमन कोनो बटे खोजेक खायेक लागीन जाब ।

अब चाइरो भाई मन खोंता से निकइल के जायेक लागलंय । गरू बड़ भाई रहे आपने छोट भाई मनके खियाते – पियाते लेजत आहाय । जाते –जाते डगर में एक गोट भादरा भेंटलंय। अब भालू सोंचोथे कि भूखे पियासे रहेक लेकन भादरा बटे चईल गोले बर डुमईर कोनो हूं भेंटाई, हले खाबूं । कईह के भालू भादरा में चइल गेलक । अब तीनो भाई आगे जायेक लागलंय थोरेक दूर गेंलंय तब एक गोट भूंडू दिसलक सेखन सांप सोंचलक मोर लगिन ले रहेक ले ये बढ़ियां ठांव रही येहे में हां रहबूं कोनो नी कोनो जाईत तो खायक ले भेंटाबे करी । अउर सांप हूं भूंडू में ढूईंक गेलक आउर उहें रहेक लागलक ।

आब दुई भाई तो छुईट गेलंय । बड़ भाई अउर छोट भाई आगे जाएक लागलंय जाते–जाते बहुत ढ़ेर दूर चईल गेलयं । एक गोट पहार मिललक गरू तो घास पतई मन के चरते खाते जात रहे लेकिन आदमी छउवा तो भुखे पियासे रहे । पहार हें एक जगे एगो आंवरा गछ रहे जे लद्दाबादुड़ फईर रहे । गरू आपन छोट भाई के भईर पेट आंवरा खियालक । आब तो उकर पेट भईर गेलक सेखन उके पियास लागलक । खने बड़ भाई हर के कहलक दादा मोके मुरूक पियास लागथे । अउर उहर पियासे अकल–बकल होयेक लागलक । सेखने दादा हर कहलक ऐ भाई जा तोंय एक गोट ठेंगा खोईज लान आउर उकर आगा के सूजू चोखाव । छोट भाई ठेंगा कर आगा के चोखाइ कन एगो आंवरा के गोंईथ देलक बड़ भाई हर कहलक अब ठेंगा के जोड़ से घुमाईके पुरबे बटे आंवरा के फेंक । पूरबे बटे फेंकलक सेखन आंवरा झड़झूड़ करलक हर गछ में गिरलक । तब बड़ भाई कहलक इने पानी नखे । अब पछिम बटे फेंकलक खने पछिम बटे ठपठिप करलक याने आंवरा चटाईन हें गिरलक । दादा हर कहलक इने हूं पानी नखे । अब उत्तर बटे उत्तर बटे फेकलक। आंवरा गिरलक खने टुभुंग करलक । हां, इने पानी आहाय । अब दुईयो भाई ओहोय बटे गेलयं जे बटे आंवरा गिरलक खने टुभुंग करलक ।

उठन जाईके देखथंय तो का देखेन कि एगो पोखरा आहाय जेहां निराजल पानी छलछला थे । अउर पोखरा में सात झन राजकुमारी मन पानी में लुकाछिपी खेलत रहलंय । एमन दुइयो भाई पानी पिलंय अब ए आदमी छउवा पानी पियत की बाईड़ के एकदम सुंदर जवान होईगेलक । राजकुमारी मन जवान छोड़ा के देईख के कहलयं कि तोंय हूं । हामर संग पानी में लुकाछिपी खेलेक आव । उमन एगो सरत हूं राखलयं सरत इ लेखे रहे रहलक कि जे हर पानी में देरी तक डूईब रही, जेके हामे खोजेक नी सकब, से हामे सातों बहिन में से जे के पसिंद लागी लेई जाई ।

बड़ भाई हर सोंचलक कि हामर तो घर न दूरा , मांय ना बाप, कईसे छोट भाई कर शादी करबूं ,कोंन हर जे बेटी देबयं, से नही सरत के मानिये जायेक बेस हेके । अउर भाई हर कर कान में कले कल उपाय बतालक हर कहलक । कि तोंय हां कईह दे अउर लुकाछिपी खेलेक जा। मोंय पोखरा कर धरी हें चरत रहबूं ।

आब सातों राजकुमारी अउर छोंड़ा पानी में लुका–छिपी खेल थंय । राजकुमारी मन पानी में डुबलंय सेखन छोंड़ा तुंरते खोइज लेलक । अब छोंड़ा कर पारी आलक सेखन गरू पानी पियेक बाहना थोथना के पानी में डूबाई देलक। सेखने छोंड़ा गरू कर नाक हें ढुंईक गेलक । राजकुमारी मन खोइंज –खोइंज थाईक गेलंय । खोजखें नी पारलंय। से खने कहलंय–हामे खोजेक नी पारब तोंय पानी से बाहरे निकल । सेखने गरू थोथना के अउर पानी में डुबाय देलक छोंड़ा पानी ले फुचुंग से निकलक। आब सरत कर मुताबिक राजकुमारी मन कहलंय कि हामे हाईर गेली तोंय सातों बहिन में से जेके पसिंद सेके छाईंट के लेई जा । छोंड़ा सबसे सुन्दराही राजकुमारी के छांटलक ।

आब तीनों झन छोट भाई, राजकुमारी , अउर बड़ भाई आगे जायेक लागलंय जाते–जाते एगो राजा कर राईज में पोहंचलंय अउर आपन रहेक बसेक जीयेक जागेक लागीन राजा से ठांव मांगलंय हर जीयत खात रहलंय ।

एक दिन राजा कर नजईर राजकुमारी उपरे पड़लक उकर सुंदराही के देईख के राजा मोहांई गेलक । उके आपन संग शादी करेक कर जिद कईर देलक । राजा छोंड़ा ठन खभर भेइज देलक कि तोंय तोर जनी के मोर से शादी कईर दे अउर बदली हे मोर से सोना ,चांदी , धन , दउलत लेई ले। अगर नि मानबे हले मोंय जबरई लइड झगईड़ के लुईट लेबूं। छोट भाई हर भारी चिंता में पईड़ गेलक । सेखन बड़ भाई हर कहलक । ए भाई मोर रहत ले तोंय का चिंता करिस । तोके कोनो नी होई तोंय चिंता मईत कर । तोर लागीन मोंय लड़बूं ।

बड़ भाई हर भारी बरीयार रहे अउर छोट भाई कर सब दुख तकलीफ में संग देत रहे । इ बात के राजा समईझ गेलक कि गरू के बेगर मरूवाल काम नी बनी। से लागिन राजा गरू के सांढ़ से लडूवालक सांढ़ हाईर गेलक सेखन हांथी से लडुवालक गरू हांथी के हुं हरूवाई देलक । आब राजा बड़े –बड़े तरवाईर बारछा लागल खुंटा से लडुवायेक कर विचार करलक सेखन गरू भाई हर के कहलक कि भाई आब मोंय तोर सहायता करेक नी पारबूं । जे तोंय चिंता नईत करबे । मोंय मईर जाबूं हले तोंय सात गोट नांवां गगरी लाईन रहबे आउर मोंर कान , सिंग, खुर, पुईंछ के छोटे –छोटे काईट के गगरी में राईख के डाईब देबे । जे खन राजा कर बारात तोर आंगना में आई पोहची से बेरा तोंय गगरी कर मुंह के उघराई देबे ।

आब दोसरा खेप गरू के लडुवाईक लागिन लोहा कर खुंटा में बड़े–बड़े तरवाईर आउर बरछा के लगाल गेलक । गरू जेखन – जेखन खूंटा के ढूंसेल तरवाईर आउर बरछा से उकर गोटा गतर लहुलुहान होई गेलक। आउर आखिर में गरू मईर गेलक ।

आब छोट भाई हर कांदत गगात भाई हर कर कान ,सिंग, खुर, पोंईंछ के काईट के गगरी में डाईब के राईख देलक । इने राजा हाथी घोड़ा पालकी गाजा बाजा कर साथ में गहगह–महमह बारता जायक लागलक ।कैक बरन कर बाजा कोन तो बाजथे देबयं कि नहीं–देबयं कि नहीं कोन तो बाजथे–देबंय रे, देबंय रे, कोन तो बाजथे अर्र जबर जस्ती लेजब अर्र जबर जस्ती लेजब । सब बरतिया नाचत–डेगत रिझे रंगे छोंड़ा कर घर पोंहईंच गेलंय । जे खने जामा बरतिया आंगना में बईठ गेलयं से खन छोंड़ा सातों गगरी कर मुंह के उघराई देलक । का देखबे सातों गगरी से मउध, भंवर आउर तुंबेल भरभराईके निकलेक लागलक आउर कोन राजा कोन परजा जेके जेठन पारथे सेठन चाबथे । हाथी घोड़ा जेके पारथे सेके लाथत खुंदत आहाय । जांमा हर किलीबिली होई गेलंय । इ लेखे चाबाचाबी खुंदाखुंदी में राजा मईर गेलक । बांचल बरतिया मन इने उने जेने परलंय तेने भागलंय राजकुमारी बांईच गेलक आब दूईयो बेकेइत बढ़िया से जियत खात आहांय ।

समाप्त

कहनी बुढ़ा – बुढ़ी

––00––

गोटेक गांव हें बुढ़ा बुढ़ी रहत रहलंय। बुढ़ीया रोज दिन बनी भूती कइर के लानत रहे आउर सांझ खने दुयो बुढ़ा बुढ़ी रांइध – बांइट कुन खात पियात रहें आउर सूख से जियत रहंय। एक दिन बुढ़ीया कहलक – ने बूढ़ा, तोंय तो कोनो काम ना धंधा नी करीस इसने बइठले बइठल खइस एको दिन काठी कुठा लाइन देते। खन बुढ़ा कहलक – ठीक आहाय तब काइल ले काठी लानेक जाबूं। दोसर दिन बिहाने बड़का रोट बुढ़ा टांगा के बोहलक आउर जंगल बटे गेलक। जंगल पोहंइच कन कहा थे की – जे ठन ले मोर आंइखे जंगल दिसा थे ओके बेइर बुड़त ले काइट कुन नी सिवाबूं होले मोके बाघ खाई। कइह कन काटेक लागथे। ठा – ठू ठा – ठू काटा थे खने गछ राह –रूह राह – रूह गिराथे। काटते काटते बेइर बूइड़ गेलक। काइट कुन सिरवायक नी सकलक। खने गुटेक बाघ आलक हर बुढ़ा कर पाछे पाछे बटे कले कल बइठ आहाय। अब बाघ कहेल – आंऊ – आंऊ का कइह रहले बुढ़ा ? मोय तो तोके खाबूं आंऊ। अब बुढ़ा डरे थर– थर कांपोथे। बूढ़ा कहेल – ए बाघ आइज कर छोड़ दे नी मोके झीन खा, बुढ़ीया के नी बताइ हों काइल ले आबूं होले खाइ देबे। बाघ कहलक ठकबे तो नहीं ? खन बुढ़ा कहलक – नी ठकों आबेच करबूं खन बाघ कहलक – जा तब झीन ठकबे अब बुढ़ा खुट – खुट घर चइल आलक। घरे आइ कून बुढ़ा कलेकल डबाय ढकाय कुन सुईत माड़लक।

अब बुढ़ीया आलक, राधलक बांटलक, हर बूढ़ा के खाएक लागिन उठात आहाय खन बूढ़ा उठबे नी करेल। बुढ़ीया कहेल – का होलक जे बुढ़ा कोनो गोइठ ना बात नी कराथीस का होलक जे ? खन बुढ़ा बड़ा मुसकिल से बतालक। मोय बेइर बुड़त ले अगर काइट कुन नी सिवाबूं होले मोके बाघ खाई । कइह रहलों, से कर ले काइल जंगल जाबूं होले मोके बाघ खाइ देइ। खन बूढ़ीया कहलक – ओह! ओकर लागिन से गूनाइन कराथीस चल उठ भात खा मोय नी बनाबूं। अब बूढ़ा उठलक, दुयोझन भात खालंय आउर सूइत गेलंय।

दोसर दिन बिहाने बुढ़ा उठलक, ओहे बड़का बुढ़ा टांगा के बोहलक हर जंगल बटे गेंलक। आउर ठा– ठो –ठा–ठो काटेक लागत आहाय। गछ मन राह –रूह गिराथे काटते – काटते बेइर बूढ़ गेलक। काइट के सिरवायेक नी सकल। हिने बाघ आयकुन कलेकल पाछे बटे बइठ अहाय। अब इने बुढ़िया फठा लेखे फुलपेंट के पिंधलक, तावा के टोपी खपालक समाट के बंदुक बनालक आउर जंगल बटे चइल हे। थोरेक दूरिहां गेलक हर बूढ़ा के गूल कइरकुन कहा थे – ए बूढ़ा –' अरे उधर बाघ बघी है? खन बाघ डरे बूढ़ा के कहेल – नखें कइह देह – नखे कइह देह। खन बूढ़ा कहेल – नहीं है सरकार खन बुढ़िया कहेल अरे ऊ जो तुम्हारे पीछे बैठा है ओ क्या है? खन बाघ कहेल – खुटरा हेके कइह दे – खुटरा हेके कइह दे। खन बुढ़ा कहेल – खुटरा है सरकार बुढ़िया कहेल – पासो तो। खन बाघ कहेल – कटी – कटी पासबे ने कटी – कटी पासबे । खन बुढ़ा कटी – कटी पासेल । बुढ़िया कहेल – कहां जी ? ठा ना ठो नहीं सुनाता है जरा जोर से पासो तो। खने बुढ़ा उठाइके घुमाइ टांगा जोर से पाइस देलक। बाघ मोइर गेलक। दियो बूढ़ा बूढ़ी काठी के बांधलंय – छांदलंय आउर बोइह कुन घर चाइल आलंय आउर बढ़िया से जियत खात आहंय।।

समाप्त

जियतबहान कर कहनी

--00--

गोटेक राजा रेहे। ओकर – गोटेक एकला बेटा रेहे, जे बडा दुलरवा रेहे। खेलते खाते जावान होलक।बिहा सादी कर लगीन धरालक रीति – रिवाज कर अनुसार मड़वा , हरदी ,तेल सेंदूर होलक। लव–लश्कर कर संगे बारात जायेक लागलंय । जाते–जाते डगरे में बेर बुइडकन आंधार होई गेलक । राजा सबके आदेश करलंय कि बारात हामर एहें जग आईज कर राईत बिताब । आऊर काईल ले आगे बरात जाब । राजा कर आदेस सुईन कन सब बरतिया आपन –आपन ठांव जगह में आराम करेक लागलय । सेखने राजा बेटा गांव देखेक कर मन से गांव बटे गेलंय । बुलते बुलते गांव हें का देखथंय कि गोटेक घरे गोटेक बुढ़िया आपन बेटा कर नाव धईर– धईर के बोर्राय–बोर्राय कांदत रेहे । राजा बेटा कांदेक के सुनलक आउर ओकर ठन गेलक । जाइकन पूछथंय कि का होलक आया जे तोंय अइसन बोर्राय – बोर्राय कन कांदथीस? सेखने बुढ़िया कहथे कि ये बेटा का कहों मोर दुःख के , हामर गांव कर पासे में पाहार आहाय , ओहोय पाहार में गोटेक गरूड राक्षस आहाय । जे हामर गांव कर सब आदमी के माईर–माईर कन खाई देत रहलक । सेखने गांव कर सब झन मिल कन गरूड राक्षस ठन अर्जी विनती करलयं कि ये लेखे सबके माईर –माईर कन झीन खा । हामें मन तोर लागीन गाड़ी भईर के रोटी–पीठा , फल फुलवाईर लेई के गोटे आदमी रोज दिन आवी । ओहे तोर आहार होई । ये अर्जी के माइन गेलक आउर ओ दिन ले रोज दिन गोटेक घर लेकन गाड़ी भईर रोटी –पीठा फल–फुलवाईर गाड़ी हें एक हर काड़ा फांईद कन राक्षस ठने लेई पहुंचायेन । राक्षस एक गाड़ी रोटी–पीठा फुल–फुलवाईर गाड़ी वाला के आउर एक हर काड़ा के खायेल , आउर आपन पेट भरेल । एहे लेखे रोज दिन कर धां धां हेके । काईल ले मोर बेटा कर पारी आहाय , मोय रांडी , सियानी आऊर मोर गोटेक एकला बेटा आहाय, ओ काइल राक्षस कर आहार बनी सेकर लागीन मोंय का लेखन करबू कइंहकन कांदथों । इके सुइन के राजा बेटा कहलक – ठीक आहाय , तोंय रोटी –पीठा पकाव तोर बेटा कर जगह में गाड़ी लेइके मोंय जाबू । बुढ़िया कर जान में जान आलक, आऊर रोटी–पीठा बनायेक लागलक ।

बिहाने भैंसा गाड़ी फांदलक । गाड़ी हें रोटी–पीठा फल–फुलवाईर भरलक । गाड़ी के लेईके गांव ले बाहरे थोरेक दूर निकललक । एक ठन गाड़ी के ठढुवाय कन जेतेक रोटी–पीठा , फल–फुलवाईर रेहे , सेके जेतेक खायेक सकेक के खालक । नी सकलक सेके हिनेहुने फेंकलक । गाड़ी हें पखना गोटी के भरलक । बेर ढ़रकेक बेरा गरूड राक्षस ठन पोहोंचलक , ओतेक ले गरूड राक्षस भुखे किलीबिली होत रेहे । जइसेन गाड़ी पोहोंचलक भुखाल तो रहबे कईर रेहे । बदईक जाइकन पाखना हें ठोर मारलक की खडर्रर्र करलक । ओकर खीस चुंदीं हें चईढ़ गेलक । कोन आदमी हेके जे मोर संग अइसन धोखा करलक । आईज मोर आहार के नाश करलक । राजा बेटा कहलक मोय जून हेकों । अतेक मान भूख आहाय हले ले मोके खा । एतेक सुनत की ओकर पांजरा हें ठोर मारलक । राजा बेटा उलेट कर दोसरा पांजरा के ओकर आगे कईर देलक आऊर कहलक ले एबट हों खा । इके सुईन के गरूड राक्षस कहथे ।तोय कोन हेकिस जे ए लेखे दोसोर पांजरा के हों मोर आगे कईर देथिस? आखन ले जे हर आलय एके ठोर महा ओकर गतर छितीछान होई जात रेहे । खने राजा बेटा कहलक मोय जीयतबहान हेकों । मोय तोर आहार बईन कन आईहों ले खा । गरूड राक्षस कहलक अरे ! तोंय तो मोर मोसा बेटा हेकिस । मोय तोके का लेखे खाबूं । तोके खाइक ले तो मोर – हाड़ –गोड़ के चबाबू । इके सुईन के राजा बेटा कहलक कि आईज ले जेतना झन के खाई हिस ओ सबके जियाय दे अउर ऐ ठांव के छोईड़ कन दूसर बट चईल दे । आईज ले कोनो आदमी जन के दुःख तकलीफ झीन देबे । गरूड राक्षस कहलक मोय अब केखों दुख नी देबूं , आउर ए ठांव के छोइड़ कन चइल देबूं । जेके –जेके तोंय जियाएक खोजो थिस उनकर हाड़ा–गोड़ा के ढुराव मोय उनके जियाई देबूं। सेखन जियत बाहन सब कर हाड़ा गोड़ा के ठुरालक गरूड़ राक्षस

आपन शक्ति से सबके जियाई देलक। सब झन आपन –आपन गाड़ी हें चढ़लंय हर आपन घर जाएक लागलंय । गाड़ी कर चलेक से धूर उड़ेक लागलक जो सब बटे अंधार होई गेलक सबकर गाड़ी हड़–हड़ाईके गांव पोहंचलंय । सेखन सब हर आपन –आपन भाई बेटा , आपन आदमी के देइख कन खुशी होई गेलंय हर नाचेक लागलंय । कोन आदमी हेके जे सबके घुराईकन लानलक ? कईह कन खोजेक लागलंय लेकिन ओके कोना हर नी भेंटलंय ।

समाप्त